

समापन भाषण

“समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध ।”

“रामधारी सिंह दिनकर”

९५

माननीय सदस्यगण,

अष्टादश बिहार विधान सभा का तृतीय सत्र दिनांक-20.07.2026 से प्रारंभ होकर आज दिनांक-24.07.2026 को समाप्त हो रहा है । इस सत्र में कुल-05 (पाँच) बैठकें हुई ।

अष्टादश बिहार विधान सभा के तृतीय सत्र में सभी माननीय सदस्यों ने बिहार के विकास के लिए अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

इस सत्र में वर्ष 2026-27 में जो खर्च होने की संभावना है, उसके संबंध में प्रथम अनुपूरक व्यय विवरण को स्वीकृति मिली ।

इस सत्र में कुल 21 (इक्कीस) राजकीय विधेयकों को स्वीकृति मिली ।

सत्र के दौरान कुल 1038 प्रश्न प्राप्त हुए, जिनमें 971 प्रश्न स्वीकृत हुए । इन स्वीकृत 971 प्रश्नों में 74 अल्पसूचित प्रश्न थे, जिनमें 70 प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए । कुल 721 तारांकित प्रश्न स्वीकृत हुए, जिनमें 697 प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए । साथ ही 176 प्रश्न अतारांकित हुए । सरकार की संवेदनशीलता से लगभग सभी विभागों ने प्रश्नों का शत-प्रतिशत उत्तर दिया ।

इस सत्र में कुल 206 ध्यानाकर्षण सूचनाएँ प्राप्त हुई, जिनमें 08 व्यक्तव्य हेतु स्वीकृत हुए, 180 सूचनाएँ लिखित उत्तर हेतु संबंधित विभागों को भेजे गये तथा 18 अमान्य हुए ।

इस सत्र में कुल 193 निवेदन प्राप्त हुए, जिसमें 186 स्वीकृत हुए एवं 07 अस्वीकृत हुए । कुल 119 याचिकाएँ प्राप्त हुई, जिसमें 106 स्वीकृत एवं 13 अस्वीकृत हुई । इस सत्र में कुल 100 (सौ) गैर सरकारी संकल्प की सूचना पर सदन में चर्चा हुई ।

इस सत्र के दौरान माननीय सदस्यों द्वारा शून्यकाल के माध्यम से जनहित के कतिपय मामले उठाये गये एवं विभिन्न विभागों के प्रतिवेदन, अधिसूचना की प्रति तथा बिहार विधान सभा के विभिन्न समितियों के प्रतिवेदन सदन पटल पर रखे गये ।

दिनांक-23 जुलाई, 2026 को प्रभारी मंत्री, वित्त विभाग द्वारा भारत के संविधान के अनुच्छेद 151(2) के अनुसरण में भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक से प्राप्त बिहार सरकार का मार्च 2024 को समाप्त हुए वर्ष 2023-24 के निष्पादन एवं अनुपालन लेखापरीक्षा वर्ष 2017-18 से 2022-23 के “निष्पादन लेखापरीक्षा-सिविल” तथा वर्ष 2024-25 के “राज्य के वित्त” प्रतिवेदनों को माननीय राज्यपाल की अनुमति के आलोक में सभा पटल पर रखा गया । साथ ही इन प्रतिवेदनों को बिहार विधान सभा के लोक लेखा समिति द्वारा विचार किये जाने एवं जनता में बिक्री के लिए प्राप्य होने का प्रस्ताव सदन द्वारा स्वीकृत हुआ । इसके अलावा अन्य विभागों के भी प्रतिवेदन रखे गए।

इस सत्र में कुल 08 जननायकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

माननीय सदस्यगण, सत्र के संचालन में सहयोग के लिए माननीय मुख्यमंत्रीजी को, माननीय उप मुख्यमंत्रीगण, माननीय मंत्रीगण, अन्य दलीय नेताओं के साथ ही पक्ष-प्रतिपक्ष के आप सभी माननीय सदस्यों का मैं आभारी हूँ।

“विचारों से जग आलोकित हो, वाणी में हो सत्य का मान,
जन-सेवा ही धर्म हमारा, यही लोकतंत्र की सही पहचान,
सदन चले मर्यादा लेकर, बढ़े विकास का सदा अभियान,
बिहार बने भारत का गौरव, यही रहे हम सबका संकल्प महान।”

समाचार प्रेषण में पत्र प्रतिनिधियों, समाचार एजेंसी, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (डिजिटल मीडिया) ने जनमानस के बीच सदन की कार्यवाही सफलता से ले जाने का कार्य किया, इस हेतु उन्हें भी साधुवाद देता हूँ।

“लोकतंत्र के सजग प्रहरी, कलम आपकी है शान,
सच की ज्योति लेकर चलना, भारत की है पहचान,
कलम-कैमरों की हर एक नजर में, जन-जन का विश्वास रहे,
शब्दों की हर एक धारा में, सत्य और इतिहास रहे।
प्रिंट हो या इलेक्ट्रॉनिक या सोशल मीडिया का विस्तृत संसार,
जनता तक सदन की गरिमा पहुँचे, यही रहे सतत् विचार,
तथ्य, सत्य और राजनीतिक संतुलन से सजा लोकतंत्र का परिवार।”

सभा के कार्य संचालन में सभा सचिवालय के पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा बिहार सरकार के पदाधिकारियों / कर्मचारियों सहित पुलिस बल के जवानों

ने तत्परता, लगन और निष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है, इसके लिए वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं ।

“जो मौन रहकर कर्म करे, वही सफलता के आधार,
आपके श्रम से ही सजता है, लोकतंत्र का यह दरबार ।’

‘सचिवालय के कर्मयोगी, अनुशासन है जिनकी पहचान,
दिन-रात समर्पित होकर, बढ़ाते हैं सदन की आन-बान-शान ।’

‘बिहार सरकार के अधिकारी, कर्मचारी सब हैं कर्मवीर,
जनसेवा का व्रत निभाते, बनते विकास के पथ-धीर ।’

‘मेरे सभी सहयोगी साथी, हर पल बने रहे सबल,
आपके श्रम, निष्ठा, सहयोग से हुआ यह यज्ञ सफल ।’

‘न कोई श्रेय, न कोई अपना अभिमान,
आपके संयुक्त पुरुषार्थ से, विधान सभा का बढ़ता मान ।”

माननीय सदस्यगण, आपने जिस गंभीरता, अनुशासन और उत्तरदायित्व के साथ सदन की कार्यवाही में भाग लिया, वह लोकतांत्रिक परंपराओं को सुदृढ़

करने वाला है । सार्थक बहस, रचनात्मक सुझाव और जनहित के मुद्दों पर आपकी सक्रिय सहभागिता ने इस सत्र को प्रभावी और परिणामोन्मुखी बनाया है ।

“परहित सरिस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।

– गोस्वामी तुलसीदास

“सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः

– वेद

जय-जय श्रीराम, जय हिंद, जय-जय बिहार

अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, अब बिहार गीत होगा कृपया आप सब अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं ।

अध्यक्ष : अब सदन की बैठक अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित की जाती है ।
